समकालीन हिन्दी कवि वेणुगोपाल की रचनाओ में सामाजिक व्यंग्य

प्रा लताबेन आहिर
गवर्मेन्ट आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, खेरगाम
जिला–नवसारी गुजराज (भारत)

समकालीन हिन्दी कविता जगतमें कवि वेणगोपाल जननादि कवि के रुपमें जाना जाते हैं । अपनी रचनाओंके माध्यमसे स्व्य एक सकल्परुपधर्मी कवि– रुप को प्रस्तुत करते हुए ऊन्होंने समकालीन काव्यधाराको एक विशेष अंदाज प्रदान किया। 'चट्टानों का जलगीत', 'हवाएँ चुप नहीं रहती', 'वे हाथ होते ह' आदि रचनाएँ उनकी रचना प्रक्रियाकी सही पहवानका घोतक है। वाम पत्रिका में लिखी गयी उनकी जंगलगाथा नामक कविता बहचर्चित हुई है। कविता लिखने के पीछे उनका जो द्रढ विश्वास है वह उनके प्रसंगोंमें उभारकर प्रकट होता है।उनके प्रत्येक कविता संग्रह को लेकर पठते समय पता चलता है कि कवि ने तीखे व्यंग द्वारा समकालीन सामाजिक परिवेश में उपस्थित सारी समस्याओं और बदलते रहते मानव मूल्यों पर करारी चोट पहुँचाई ह। यह ही नहीं ग्हरे असंतोष और आक्रामक रुप के साथ समाज और व्यवस्था की विकृतियों को उभारकर उसकी सडांध कौ मीटा देने के लिए आवश्यक निर्णय लेने का साहस भी उन की रचनाओ में विद्यमान है। आज के परिवेश की यथार्थ विरोधी बातों और घटनाओं को देखकर कवि निराश हो जाता हैं। कवि की द्रष्टि समाज के उन लोगों पर पडती है, जो इन सब सामाजिक कुरितीयों को सहकर हताश–निराश हो चुके हैं । उनकी स्थिति को प्रकट करने के लिए आज की सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य प्रस्तुत करते हैं----

''क्यों नहीं डेखते उन हाथों की।
जे अपने आप में
किसी बन्दुक, किसी बम या किसी
बारुद भन्डार से कम नहीं होते
वे हाथ जिनमें, वक्त आने आने पर
वक्त बन्दुक थमा दिया करता है।
अैर फिर फायरों के बीच कान्ति का जन्म होता है।
वे हाथ जो लगातार उठ रहे हैं, बरस रहे हैं
अवतार ले रहे हैं
खेतों मैं, खलिहानों में, सडकों पर, गलियां पर''।

लोगों को संघर्षों से जुडने और उसे ले जाने की समझ और द्रढ संकल्प-शक्ति यहाँ विद्यमान हे । कवि की जागरुक द्रष्टि अपने चारों ओर की सामाजिक विसंगतियों की ओर है जो आठवें दशक के अनेक कवियों में प सकते हैं । कविने जीवन की विसंहीयों और घटनाओं तथा घुटन और छटपटाहट को तीखे व्यंग्स के साथ प्रस्तुत किया हे । नित्य जीवन के अनुभवों ने उन्हें सामाजिक विषमताओं से भली-भाँति अवगत कराया। इसलिए उन्होंने भविष्य की सभावनाओं पर विचार करके एक निरर्थक स्थिति की और संकेत किया है--

"सच तो यग है की यात्राएँ बडी खूंखार होती हे मेरे दोस्त
जो हमारे पैरों द्वारा बनते निशानों का भी
हमसे छीन लेती हे और जो हमारी-
थकान के आधार पर
ह्मारा नहीं निर्जिव रास्तों का महत्व सिध्ध करती है"।

कवि श्री वेणुगोपाल का कहान है कि, वर्तमान सामाजिक जीवन में व्यक्ति का स्वाभिमान नष्ट हो चुका है। पहले हिन्दी के प्रसिध्ध कवि श्री मैथीलीशरण गुप्त जी कहते हैं की 'हम भी कुछ है', यह ध्यान रहे, सब जाये, अभी पर मान रहे'। लेकीन आज की परिस्थिति इसके विरुध्ध है। आज व्यक्तियों में स्वाभिमान का अस्तित्व बचा हुआ नहीं पाता है। इसलिए आज की जिंदगो में व्यक्ति सोचता है कि स्वाभिमान की भावना उनके लिए एक भारी बोज है। इसे ढोना लाचार काम है। इस प्रकार के बेचारे व्यक्तियों पर व्यंग्य की धार पहुँचाए हुए कवि कहते हैं--

"भावना चाहते हुए भी
भाह नहीं प रहा हूं
इस गाले से चीपटी हुइ जिन्दगी से"।

भारत की दशा-दुर्दशा से रोककर रखनेवाले समकालीन दौर के कवि के रुप में वेणुगोपाल का नाम उल्लेखनीय है। जहां उगना है नामक एक छोटी कविता में अपने मनुष्यधर्मी विचार को प,गध किए हुए वर्तमान सामाजिक परिवेश पर इस प्रकार व्यंग्य किया है कि किसी भी परिस्थिति में मनुष्य अपना कर्म निभाकर ही जीवित रह सकता है---

"बे-हवा में कहलहाना है
अंधेरे से रपशनी खींचनी है
पत्थरों से पानी निचोडना है
हर हाल में उसे उगना है"।

इस प्रकार कविने अपनी व्यंग्यात्मक द्रष्टि आम जनता के जीवन यथार्थ की विविध परिस्थितियों पर डालकर समकालीन सामाजिक समस्याओं के विरुध्ध संघर्ष करने की प्रेरना दी है।

कवि की उपर्युक्त कविताओं में व्यक्त सामाजिक व्यंग्य की परख से यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश समकालीन व्यंग्य की पैनी धार से अपने परिवेश की सादी विसंगतियों पर पहुँचाने में सफलता हांसिल की है। उनकी कविता में व्यंग्यात्मक आक्रामकता और तीखे प्रवाह की शक्ति का जो सशक्त समावेश है जिसक द्वारा कवियों ने बिना किसी हिचक से परिवेशगत विसंगतियों और विद्रूपताओं का पर्दाफाश किया है। हमारे वर्तमान परिवेश की स्थिति ऐसी हो गई है की सारे आदर्श एवं माना मुल्य मटियामेट बन गए है। चित्र, धर्म, संस्कृति, नैतिकता आदि सब समाज से उड गए हैं। समाज में अनैतिक पुरुशार्थ हीन और बुजदील इंसानों की संख्या बहुत बढ गई है। इन सबको सामाजिक विडम्ब्ना या विद्रूपता नहीं ते और क्या नाम देना है। इसे सीधो-सादी-सरल भाषा में अभिव्यक्ति दे तो इसकी भयानकता का रुप खुलकर सामने नहीं कीया जा सकता। इसलिए ही समकालीन कवियों ने कविता में व्यंग्य या सटायर की मुद्रा को अपनायी है। इसका रुप एक उपकरण के रुपम नइ कविता नमें भी है, फिर आगे चलकर समकालीन कवियों ने इसे यथार्थ के बहुआया और बहुस्तरीय रुपमें दिखाई पडनेवाली विसंगतियों के प्रति जनमानस में अरुची प्रदान करने का प्रयत्न कीया है।

वस्तुतः सातवें डशक के आरम्भ में लिखी हुई कविताएँ कई तरह से विक्षिप्त सामुहिक मन को प्रस्तुत करनेवाली है। समकालीन कवियों ने अपनी कविता में तीखे व्यंग्य का प्रयोग करके कविता के तेवर बदलने के प्रयत्न करनेवाले कवियों में दवलाते, लीलाधर, जगूडी, मंगलेश, डबराल आदि के योगदान भी उल्लेखनीय है।

संदर्भसूची

१. वेणुगोपाल, 'हवाएँ चुप नहीं रहती'- पृष्ठ ८०
२. वेणुगोपाल, 'वे हाथ होते है' -पृष्ठ २८
३. वही- पृष्ठ १४
४. वेणुगोपाल (१९८४). 'पहल'